आर २१ ५१

रजि० नं० बी ४४४८

कुछ आक्षेप

हरिजनसेवक

दो आना

(स्थापक: महात्मा गांधी)

भाग १५ सम्पादक: किशोरलाल मशरूवाला सह-सम्पादक: मगनभाभी देसाभी अंक ३७

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाभी देसाभी
नवजीवन मुद्रणालय, अहमदाबाद-९

अहमदाबाद, शनिवार, ता० १० नवम्बर, १९५१

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६
विदेशमें रु० ८; शि० १४

विनोबाकी अुत्तर भारतकी यात्रा — ४

[नर्मदाकी घाटीमें — २]

रजवांस

सागरसे हम लोग क्रमशः मेहर, रजवांस और मालथौन गये। तीनों गांव सागर जिलेके ही अन्तर्गत हैं। रजवांसमें विनोबाजी गांवके कभी घरोंमें गये। अुनमें सभी थे — हरिजन, चमार, तेली, बढ़भी, ब्राह्मण, जैन और दूसरे लोग। यहां स्त्रियां पांवोंमें चांदी और गिलटके बड़े-बड़े गहनें पहनती हैं। विनोबाको यह देखकर आश्चर्य हुआ और अुन्होंने पूछा कि कोभी अपराध किये बिना ही तुम लोग यह कठिन दण्ड किस लिभे भोगती हो? अुन्होंने स्त्रियोंसे परदा छोड़नेके लिभे भी कहा। घरोंके छप्परों पर साग-भाजीकी हरी बेलें छायी हुभी थीं। विनोबा अिस दृश्यको देखकर खुश हुभे। अिस प्रसन्न हरियालीसे प्रायः कोभी भी छप्पर खाली नहीं था।

आम सभा तो बुनियादी शिक्षा प्रणालीका अेक अुत्तम पाठ हो गयी। अेक भाभीने हिन्दूधर्मका तत्त्व समझना चाहा, तो विनोबाने अुसकी पंचसूत्री व्याख्या ही पेश कर दी:

१. अपनी मेहनतकी रोटी खाओ, झूठका आश्रय बिलकुल न लो।
२. अपने पड़ोसीकी सेवा करो।
३. गो-सेवा करो।
४. प्रातःकाल अुठकर और रातको सोते समय प्रार्थना करो और रामका नाम लो।
५. किसीसे बैर न करो।

सभाका रूप वर्गका हो गया। और विनोबाने अुसे तब तक पूरा नहीं किया, जब तक कि अुनके अिन प्रौढ़ विद्यार्थियोंमें से अेकने पूरी परिभाषा सही-सही दुहराकर नहीं दिखाभी। अुन्होंने अेक-अेक करके कभी व्यक्तियोंसे खड़े होकर अुसे दुहरानेके लिभे कहा। किसीको ५०-६० प्रतिशतसे ज्यादा गुण नहीं मिले। अन्तमें जो काम किसी औरसे नहीं बना, अुसे अेक घूंघटसे ढंकी हुभी बहनने कर दिखाया। अुसने सही अुच्चारणके साथ पूरी व्याख्या सही-सही दुहरा दी।

लोगोंने स्वराजके बाद आयी हुभी निराशाकी बात कही, तो विनोबाने अुनसे पूछा: "स्वराज आये कितने वर्ष हुभे हैं?" अेकने कहा — बीस। दूसरेने कहा — आठ। और लोगोंने भी अैसे ही अुत्तर दिये। विनोबाको अिसकी कल्पना थी। अुन्होंने कहा: "अिसमें तुम लोगोंका कोभी दोष नहीं। मुझे मालूम है कि तुम्हें ठीक जानकारी नहीं मिलती। यह स्वराजका पांचवां वर्ष है। सवाल यह है कि क्या तुम स्वराजके बाद भी सोते रहनेवाले हो या अपनी मददके लिभे खुद कुछ पुरुषार्थ करनेवाले हो? अगर अपनी मदद तुम खुद नहीं करना चाहते, तो भगवान् भी तुम्हारी मदद करनेवाला नहीं है। वह अन्न और कपड़ेकी वर्षा नहीं करेगा। अुसकी दया तो धरती पर वर्षाके ही रूपमें प्रगट हो जाती है। अुसके बाद कपड़ेके लिभे कपास और आहारके लिभे अनाज बोनेका काम तुम्हारा है। तुम यदि सूर्योदयके बाद भी सोते रहो, तो तुम्हें अुसका अुजाला कैसे मिलेगा? अिसलिभे अुठो, जागो, और काममें जुट जाओ।"

वर्णन समाप्त करनेके पहले अिस गांवकी अेक हृदयस्पर्शी घटनाका अुल्लेख करना जरूरी है। अेक बहन ताड़ गयी कि विनोबा अुसके घरमें प्रवेश करनेवाले हैं। वह भागती हुभी भीतर गयी और सिर पर अेक घड़ा पानी डालकर वैसी ही गीले वस्त्रोंमें वापिस आभी और बाबाके चरणोंमें गिर पड़ी!

मालथौन

मालथौन अिस दिशामें मध्यप्रदेशका अन्तिम गांव है। यहां विनोबाने लोगोंके सामने अपना हृदय खोलकर रख दिया। लोगोंने बताया कि गांवमें खेतीके लायक जमीन ही नहीं है। अनाजके लिभे अुन्हें दूसरे गांवोंका मुंह ताकना पड़ता है। गांवसे दूर कुछ लोगोंके पास जमीनें थीं, फिर भी अुन्होंने ३० अेकड़ दिये।

मध्यप्रदेशमें यह हमारा अन्तिम दिन था। विनोबाने बताया: मैं चाहता हूं कि मेरा यह संदेश देशमें हर जगह पहुंचे। अुन्होंने स्वावलम्बनका महत्त्व भी समझाया। कहा: यशोदाकी अर्थव्यवस्थाका आधार पैसा था, अुसमें मेरा विश्वास नहीं है। मैं तो कृष्णकी अर्थव्यवस्था चाहता हूं, जिसका आधार वितरण है। कृष्णको यह नहीं भाता था कि गांवोंके लोगोंका, और खासकर बालकोंका, भोज्य 'माखन' पैसेके लोभमें शहरके बाजारमें जाय। गांववाले अपनी कपास बेच देते हैं और बाहरसे कपड़ा लाते हैं; तिल बेचते हैं और तेल खरीदते हैं; शहद बेचकर शक्कर खरीदते हैं; और अपना स्वास्थ्यप्रद मक्खन बेचकर वनस्पति ले आते हैं। सारांश यह कि वे अमृत देकर विष लेते हैं। और यह सब सिर्फ पैसेके लिभे। विनोबाने कहा: मुझे यह सब देखकर बहुत दुःख होता है। मैं तो साम्ययोग चाहता हूं, जिसमें गांववाले अपनी पैदा की हुभी चीजें आपसमें गांववालोंको ही आवश्यकतानुसार बांटेंगे। तुम लोग यदि अैसा कर पाये, तो हरअेक गांवमें स्वर्गका सुख अुतर आयेगा।

गांववालोंने अुनसे अनुरोध किया कि वे सरकार पर जोर डालकर अुस गांवमें अेक अस्पताल खुलवा दें। अुनका कहना था कि अस्पताल न होनेसे वहां मृत्युसंख्या बढ़ रही थी। विनोबाने कहा: "मृत्युसंख्याकी वृद्धिका कारण अुचित दवाभियोंकी कमी नहीं है, बल्कि पोषक आहारका अभाव है। क्या हमारे पूर्वज आजकी दवाभियां लेते थे? वे अेक-दो दिनका अुपवास कर डालते थे और रोगकी जड़ ही निर्मूल कर देते थे। यदि हम स्वाभाविक ढंगसे जीवन बितायें, तो दवाओंकी जरूरत ही न रह जाय; और जिनकी जीवनचर्या अस्वाभाविक है, अुनके लिभे दवाओंका अुपयोग नहीं। अस्पताल खुलनेमें अितनी देर हुभी है, अिसके लिभे आपको भगवान्‌का धन्यवाद देना चाहिये। अिसका विचार ही छोड़ दो। अपने गांवमें ही जड़ी-बूटियां अुगाओ और अुनसे दवाभियां बनाओ। यदि आप अस्पताल खोलेंगे, तो दवाभियां खरीदनेमें आपका बहुतसा रुपया विदेश जायगा, और आपको धन तथा स्वास्थ्य दोनोंसे हाथ धोना पड़ेगा।"

www.vinoba.in

अपने भूदान-यज्ञका महत्त्व समझाते हुअे विनोबाने अुनको अुसका रहस्य और दूर तकके परिणाम समझाये। अुसमें महज दानकी बात नहीं है, वह स्वामित्वके अधिकारका त्याग है। हरअेकको दान करना है और अिस भावनासे करना है कि वह अपने पुत्रको अुसका हिस्सा दे रहा है। विनोबाने जमीदारोंसे कहा कि वे अुनसे कम लेकर अुनकी प्रतिष्ठामें बट्टा नहीं लगाना चाहते। वे आज नहीं देते तो निश्चय है कि दो दिनके बाद तो देंगे ही। अिसके सिवा, किसीको अपने दानका गर्व भी नहीं करना है। कोअी पिता अपने पुत्रको अुसका प्राप्य हिस्सा देनेमें गर्व नहीं करता। अिसी भावनासे यदि दरिद्रनारायणको अुसका प्राप्य दिया जायगा, तो दोनोंका कल्याण होगा, दाताका और गृहीताका। भाषणके अन्तमें चेतावनी देते हुअे विनोबाने कहा कि अुनके अिस यज्ञकी असफलतासे साम्यवादी विचारधाराकी विजय होगी, और लोगोंको खूब सोचकर अिन दोमें से किसी अेकको चुन लेना है।

मध्यप्रदेशका कुल भूदान ६४०० अेकड़ हुआ है, दाताओंकी संख्या है ५६३। जिनमें से ५४१ ने २५ अेकड़से कम दिया है, ९ नें २५ और १०० के बीचमें दिया है, और १३ ने १०० अेकड़से ज्यादा दिया है। मध्यप्रदेशमें प्राप्त अिस भूमिका बंटवारा करने और ज्यादा भूमि अिकट्ठी करनेके लिअे अेक समिति नियुक्त करनेकी जरूरत थी। यह काम सर्वसंम्मतिसे श्री दादाभाअी नाअीकको सौंपनेका निश्चय हुआ। श्री दादाभाअी अिस यात्रामें लगातार हमारे साथ रहे हैं। चरखा-संघ अुन्हें अिस कामके लिअे मुक्त करेगा, तो संघको काफी असुविधा होगी। लेकिन यह काम कम महत्त्वपूर्ण नहीं है और साथ ही अुसमें खादी-विचारके प्रचारका भी अवकाश मिलेगा। अिसलिअे सोच-विचार समितिका संयोजक अुन्हें ही बनाया गया; साथ ही अुन्हें दो सहकारी और दिये गये — नागपुरके श्री अप्पा गांधी और अमरावतीके श्री राजेन्द्र मालपाणी। तीनों खूब योग्य और अनुभवी हैं; साथ ही अुन्हें अपने अनेक तरुण साथी कार्यकर्ताओंका सहयोग भी मिलेगा, जो यथासमय जरूरी मदद करते रहेंगे। भूदान-यज्ञमें तीनोंकी पूरी श्रद्धा है। श्री दादाभाअीकी तरह श्री राजेन्द्र मालपाणी भी विनोबाकी अिस यात्रामें साथ रहे हैं और अभी भी हमारे दलके अेक कर्मठ सदस्य हैं। समिति निस्सन्देह अुत्साहसे और अपनी पूरी ताकतसे काम करेगी। लेकिन जैसा कि विनोबाने कहा, अपने आपमें अुनकी स्थिति शून्यकी है, जिसकी कीमत अुसके पूर्ववर्ती अंकोंके साथ ही बढ़ती है। विनोबा आशा करते हैं कि सब पक्षोंके लोग अिस समितिको अपना पूरा सहयोग देंगे।

अुपसंहारमें अेक बातका अुल्लेख आवश्यक है। शायद कोअी भी जगह अैसी नहीं थी जहां लोगोंने विनोबासे आगामी चुनावोंके सवाल पर अुनकी सलाह न मांगी हो। अिस प्रश्न पर विनोबाने अपने निश्चित विचार और राय लोगोंके सामने साफ-साफ रखी। अेक सभामें अिस प्रश्नका अुत्तर देते हुअे अुन्होंने कहा: "मैं चाहूंगा कि आप अपना वोट अुन्हें न दें, जो हिंसामें विश्वास रखते हैं या साम्प्रदायिक संस्थाओंके हैं। विभिन्न राजनीतिक दलोंकी ओरसे जो लोग खड़े हों, अुन्हें वोट देते हुअे लोगोंको सिर्फ दलका विचार नहीं करना चाहिये। अुन्हें अुम्मीदवारोंकी योग्यता और प्रामाणिकताका विचार जरूर करना चाहिये।" विनोबाने अिस बात पर भी जोर दिया कि राजनीतिक विचार-भेदके कारण दोस्तीके संबंध नहीं बिगड़ने चाहियें। चुनाव-आन्दोलनोंमें खेलके अिस नियमका पालन सब लोगोंको करना चाहिये। अिस प्रसंगमें अुन्होंने जयप्रकाशजीके परंधाम-आगमनका जिक्र किया और बताया कि हम दोनोंने साथ-साथ प्रार्थना की और रहेंट चलाया। अिस तरह हम लोग अपनी मित्रता ज्योंकी त्यों कायम रखते हुअे चुनाव लड़ सकते हैं।

पण्डित जवाहरलाल नेहरू कांग्रेसकी आन्तरिक शुद्धि और अेकताके लिअे जो अथक कोशिश कर रहे हैं, अुसकी विनोबाने सराहना की और आशा प्रगट की कि अुनकी यह कोशिश सफल होगी। अुन्होंने आगे कहा, यह कोशिश अगर चुनावकी तात्कालिक दृष्टिसे ही हुअी, तो वह व्यर्थ जायगी। शुद्धिके लिअे त्याग और सेवाका अेक निश्चित कार्यक्रम होना जरूरी है।

लोग विनोबाके स्वास्थ्यकी खोज-खबर पूछते हैं और चिन्ता जाहिर करते रहते हैं। अिन सब मित्रोंकी चिन्ता स्वाभाविक है। यह सचमुच अेक आश्चर्य ही है कि अिस अुम्रमें, और पेटके व्रण (duodenal ulcer) की तकलीफ सहते हुअे भी वे अितनी बड़ी १५ और २०-२० मील तककी मंजिलें तय करते रहते हैं। लेकिन जैसा कि वे खुद कहते हैं, जाने कहांसे अुन्हें अिसके लिअे शक्ति मिलती जाती है। क्या यह भगवान्का अटूट अनुग्रह ही नहीं है? जो हो, हमें चिन्ता नहीं करनी है, क्योंकि —

"सुने री, मैंने निर्बलके बल राम।"

(अंग्रेजीसे) दा० मूं०

गरीब अुम्मीदवार

प्रश्न — १. मैं धारासभाके चुनावमें स्वतंत्र अुम्मीदवारकी हैसियतसे खड़ा होना चाहता हूं। लेकिन आजकल जिस तरह चुनाव लड़ा जाता है, अुसमें पैसा खर्च करनेकी जरूरत होती है। मतदाताओंको रिश्वत या दूसरा कोअी लालच न भी दिया जाय, तो भी अुन्हें लाने-ले जानेकी सुविधा तो करनी ही पड़ती है। अिसके सिवा, भाषण करने, पर्चे छपवाने और लोगोंसे मिलने-जुलनेके सिलसिलेमें भी खर्चकी आवश्यकता होती ही है। गरीब आदमी अितना पैसा कहांसे लाये? मेरे पास तो अन्तःकरणपूर्वक सेवा करनेकी वृत्तिके सिवा कोअी दूसरा धन नहीं है। अैसी स्थितिमें मेरे जैसे लोग चुनावमें किस तरह भाग लें?

२. मेरा पक्ष चुनावमें शुद्ध और सज्जन लोगोंको ही खड़ा करना चाहता है। लेकिन अैसे लोग धनवान् भी हों, यह तो शायद ही होता है। वह पुराना, अीमानदार तथा निष्ठावान् कार्यकर्ता होते हुअे भी अत्यन्त साधारण स्थितिका आदमी होता है। हमें न धनिकोंकी सहायता होती है, और न सत्ताका समर्थन। हम लोगोंके बहुमतकी कोअी संभावना नहीं है। लेकिन यदि हम कर्तव्यपरायण लोगोंका अेक विरोधी पक्ष खड़ा कर सकें, तो अुसका यह परिणाम तो होगा ही कि जिस पक्षकी सरकार होगी, अुस पर कुछ-न-कुछ अंकुश रहेगा और अुसे अुद्धत या अभिमानी बननेसे रोका जा सकेगा। लेकिन अितना कर सकनेके लिअे भी हमारे पास जरूरी पैसा नहीं है। हम लोग चुनाव किस तरह लड़ें?

३. सर्वोदय-समाज अपने योग्य और सज्जन सदस्योंको चुनावके लिअे क्यों नहीं खड़ा करता?

अुत्तर — पहले तो धारासभामें जानेसे ही जनताकी अच्छी या भरपूर सेवा हो सकती है, यह खयाल छोड़ देना चाहिये। जिसे अन्तःकरणपूर्वक जनताकी सेवा ही करनी हो और प्रत्यक्ष सेवाकी रुचि हो, अुसे तो जब तक अुसमें चल-फिरकर सेवा करनेकी शक्ति है, तब तक धारासभामें जानेकी अिच्छा ही नहीं करनी चाहिये। गांधीजीने अेक बार सेवकोंकी अेक सभामें नीचे लिखे मतलबकी सीख दी थी:

तुम्हारे जैसे सेवकोंको मैं धारासभामें कैसे भेजूं? मुझे तुम लोगोंसे अैसे अनेक काम लेने हैं, जो मैं श्री भूलाभाअी देसाअी या श्री श्रीनिवास आयंगरसे नहीं करा सकता। वे अुन कामोंको नहीं कर सकते। वे धारासभामें जायंगे, तो अुनसे कुर्सीकी शोभा बढ़ेगी, देशकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी। लेकिन अगर मैं अुन्हें यहां

www.vinoba.in

तुम्हारी जगह बैठाअूं, तो अुलटे मेरे काममें ढील होगी। अिसलिअे जिनमें जनताके बीच रचनात्मक काम करनेकी शक्ति नहीं है, अुनसे ही मैं धारासभाका काम लेना चाहता हूं। (यह गांधीजीके शब्दोंका अुद्धरण नहीं, सिर्फ सारांश है।)

अलबत्ता, यह बात अेक भिन्न परिस्थितिमें कही गअी थी। आज परिस्थिति बदल गअी है और रचनात्मक काम करनेवालोंके लिअे धारासभामें भी स्थान है, बल्कि अुनकी ही दृष्टिसे काम करनेवाली सरकारका होना जरूरी भी है।

तब भी, गांधीजीकी दी हुअी सलाहमें निहित सिद्धान्तमें से ही हमें नअी परिस्थितिके लिअे अुपयोगी नियम मिल सकते हैं। फर्ज कीजिये कि अेक कार्यकर्ता है, जिसने वर्षों तक काफी रचनात्मक काम किया है। वह अुस काममें पूरी तरह परिपक्व हो गया है, अुसे लोग अच्छी तरह जानते हैं और निजी परिचयके आधार पर अुसमें अुनका पूरा विश्वास है। लेकिन अब अेक युवककी तरह भागदौड़ करने और शरीरश्रम करनेकी अुसकी शक्ति मंद पड़ गअी है, यद्यपि अपने अनुभवका लाभ देने और दूसरोंसे काम लेनेकी शक्ति अुसमें मौजूद है; कामकी योजना बनाने और संघटन करनेकी कुशलता भी है; जनता और दूसरे रचनात्मक कार्यकर्ता अुसके विषयमें यह अिच्छा करते हैं कि वह धारासभामें रहे, तो अच्छा हो। अुसकी अैसी प्रतिष्ठा है कि यदि अुसे खड़ा किया जाय, तो बहुतेरे दूसरे पक्ष अुसके खिलाफ अुम्मीदवार खड़ा करनेकी बात नहीं सोचेंगे; और यदि कोअी खड़ा हो भी जाय, तो लोग अिस कार्यकर्ताको अपने ही अुत्साहसे मत देने जायंगे। मुझे किसीको हराना है, अैसी अुमंग अुसके मनमें नहीं होती। फिर आवेशका तो सवाल ही कहां? स्वयं लोगोंको ही अुसके विषयमें अैसा लगता है कि यह तो हमारा आदमी है, यह हारेगा तो वह हमारी हार होगी। अैसा सोचकर वे खुद अेक-दूसरेसे आग्रह करते हैं और अुन्हें अुसे मत दिलानेके लिअे ले जाते हैं। अैसे अुम्मीदवारको धनकी जरूरत नहीं पड़ेगी। चुनावमें आवश्यक पत्रक आदि भी अुसके लिअे लोग खुद निकालेंगे, अुसके लिअे प्रचारका काम भी लोग स्वयं ही करेंगे। धारासभामें वह अकेला होगा, तो भी सरकार अुसकी बात पर ध्यान देगी। अुदाहरणके लिअे, गुजरातमें यदि श्री रविशंकर महाराज स्वतंत्र अुम्मीदवारकी तरह खड़े होनेकी अिच्छा करें, तो मुझे लगता है कि वहां कोअी भी पक्ष अैसा नहीं होगा जो अुनके खिलाफ अुम्मीदवार खड़ा करनेकी बात सोचेगा। और यदि कोअी खड़ा हो भी जाय, तो भी अुन्हें अेक भी पैसेकी जरूरत नहीं पड़ेगी। लोग महाराजसे कहेंगे कि आप साबरकांठा क्षेत्रमें अपना कुअें खुदवानेका कार्यक्रम चलने दीजिये। चुनावकी खबर हम आपके पास भेज देंगे। आपको चिंता करनेकी जरूरत नहीं है। अैसी स्थिति होने पर भी महाराजको चुनावमें पड़नेके लिअे थोड़े ही तैयार किया जा सकता है? वे कहेंगे कि अभी तो मुझे खुद अपनी निगरानीमें पचास बोरिंग कराने हैं। मैं अुस काममें लगा होअूं और बंबअी-पूनासे खबर आ जाय कि धारासभाकी बैठकमें हाजरी भरनेके लिअे आअिये, नहीं तो आपका नाम निकाल दिया जायगा। तो मैं कुअें खुदवानेका काम छोड़कर वहां क्यों दौड़ा जाअूंगा? अैसी झंझट मुझे नहीं चाहिये। खैर, आशय यह है कि निर्धन व्यक्ति या पक्ष चुनाव लड़ना चाहे, तो अुसकी रीति यह है। पहले सेवा करना, प्रतिष्ठा कमाना और लोगोंका प्रेम हासिल करना। वह लोगोंके हृदय जीतनेका ध्येय अपने सामने रखेगा, प्रतिपक्षीको जीतनेका नहीं। अैसी प्रतिष्ठा या प्रेम जब तक नहीं पाया है, तब तक अुम्मीदवारी जनताके ही निकट करना है, धारासभाके चुनाव-अधिकारीके पास नहीं।

अूपर जो कहा है, अुसीसे यह समझमें आ जायगा कि सर्वोदय-समाज खुद अुम्मीदवार खड़े क्यों नहीं करता। प्रचलित परिपाटीके अनुसार वह वैसा करना चाहे, तो अुसे अेक राजकीय पक्ष ही खड़ा करना पड़ेगा और अुसके लिअे निधि भी अिकट्ठी करनी पड़ेगी। अुसके लिअे धनिकोंसे तो मदद लेनी ही पड़ेगी। फिर मदद करनेवालोंमें से कुछ खुद खड़े होना चाहें, या अपने किसी मित्रको खड़ा करना चाहें, तो अुनकी शरममें आना पड़ेगा। सोलह आना शुद्ध योग्यताके लोग न मिलें, तो बारह आना, दस आना और आठ आना योग्यतासे ही संतोष मानना पड़ेगा और अुसे चलाना पड़ेगा। नतीजा यह होगा कि दूसरे पक्षोंमें जो बात हो रही है, वही सर्वोदय नामधारी पक्षमें भी होने लगेगी।

कोअी अुम्मीदवार योग्य है कि अयोग्य, अिसका प्रमाणपत्र देनेका काम भी सर्वोदय-समाज नहीं कर सकता। कारण जिस क्षेत्रसे अुम्मीदवार खड़ा होता है, वह अैसा होना चाहिये कि वहांके लोग अुसे पहलेसे ही जानते हों। स्थानिक लोगोंकी अपेक्षा सर्वोदय-समाज अुसे ज्यादा कैसे जान सकता है? चाहे जिस स्थानके व्यक्तिको चाहे जहांसे खड़ा करनेकी रीति जब चलती है, तो वहां पैसेकी जरूरत होती है, सिफारिश और स्तुतिगान करना पड़ता है। क्योंकि अुस अपरिचित आदमीको अुस जगहके लोग शायद जानते ही न हों। गांवके लोगोंने तो शायद अुसका नाम भी न सुना हो। फिर भी अुसके नियुक्त किये हुअे अेजन्टोंको अपनी कुशलतासे अुसके लिअे मत जुटाने पड़ते हैं।

सारांश यह कि जिसने सेवा द्वारा प्रतिष्ठा नहीं पायी है, पर जिसकी सेवा करनेकी अिच्छा है, अुसे अिस चुनावमें खड़े होनेका मोह छोड़ना चाहिये। तथा मतदाताओंको भी खड़े हुअे अुम्मीदवारोंमें से जिसे वे खूब जानते हैं, जिसके विचार और जिसकी प्रामाणिकता, योग्यता, बुद्धि आदि वे स्वयं जानते हों और पसन्द करते हों, अुसे ही अपना मत देना चाहिये। यदि अुन्हें अिन बातोंकी खबर नहीं है, तो तालुकेके सज्जन तथा अुम्मीदवारको बखूबी जाननेवाले निष्पक्ष कार्यकर्ताओंसे पूछना चाहिये और बादमें अपना निर्णय करना चाहिये। अिस विषयमें अुम्मीदवारोंका सच्चा परिचय दूरके लोग या संस्थायें शायद ही दे सकती हैं।

वर्धा, १३-१०-'५१ **कि० घ० मशरूवाला**

(गुजरातीसे)

अेक अुपयोगी सुझाव

[श्री अेम० अे० बालसुब्रह्मण्यम् दक्षिण भारतमें मदुक्करअी ग्राममें हरिजन-सेवाका काम करते हैं। अिस कामकी अपनी योजनाकी, जिसका अुन्होंने अपने गांवमें प्रयोग भी किया है, रिपोर्ट अुन्होंने भेजी है। यहां हरिजन-सेवकोंके लाभार्थ अुसका सारांश दिया जा रहा है। —सं०]

मेरा अनुभव है कि हरिजनोंकी अुन्नतिका काम बड़ा कठिन है। मैं पिछले पंद्रह वर्षोंसे हरिजनोंमें कार्य करता आ रहा हूं। मैं हमेशा यह सोचता रहा हूं कि अिनकी अुन्नतिका सही और अुत्तम अुपाय क्या हो सकता है। करीब अठारह महीने हुअे, मुझे अेक व्यावहारिक योजना सूझी। मैंने अुस पर अमल करनेकी कोशिश की और परिणाम बहुत लाभकारी आये।

मैंने कुछ अुत्साही हरिजनोंको अिकट्ठा किया और अुनके सामने अपनी योजना रखी। योजना बहुत सीधी और सरल थी। अिन हरिजनोंको मैंने अिस बात पर राजी किया कि वे अपनी बस्तीका और अुसके आसपासका कूड़ा-कचरा अिकट्ठा करें और अुसका अेक ढेर लगायें। शुरूमें अुन्होंने अिस कामके प्रति ज्यादा रुचि नहीं दिखाअी। लेकिन अुनकी यह अुदासीनता शीघ्र ही दूर हो गअी और वे काममें दिलचस्पी लेने लगे। छः महीनेके बाद जब ढेर

www.vinoba.in

काफी बड़ा हो गया, तब अुसको नीलाम किया गया और अुससे २५० रुपये मिले। अुन लोगोंको जिससे बड़ा आश्चर्य हुआ, और बहुत अुत्साह भी मिला। परिणाम यह हुआ कि दूसरे नीलाममें अुन्हें पहलेकी अपेक्षा ज्यादा पैसा मिला। जिस समय अुनके पास पांच सौ रुपयेकी निधि है, और वे अगले नीलामकी राह अुत्सुक होकर देख रहे हैं।

जिस रकमसे अुन्होंने हरिजनोंके लाभके लिअे अेक निधिकी स्थापना की है, और अब वे दूसरी जगहोंसे कर्ज लेनेके बजाय अुसमें से ही कर्ज लेते हैं। दूसरी जगहोंसे कर्ज लेने पर बहुत ज्यादा ब्याज देना पड़ता था। यहां अुन्हें बहुत मामूली ब्याज देना पड़ता है। अिस प्रबन्धसे अुन्हें बहुत राहत मिली है।

(अंग्रेजीसे)

हरिजनसेवक

१० नवम्बर १९५१

कुछ आक्षेप

खान-पानकी आदतें

"'हममें से सभी पुरानी लीक पकड़े रहनेके आदी हैं। खान-पानकी ही बात लीजिये। अगर हमें कोअी अैसी चीज, जिसका हमें अभ्यास हो गया है, नहीं मिलती, तो हम परेशान हो जाते हैं और नाराज होते हैं। अगर हमें चावल खानेकी आदत है, तो बस, कुछ भी क्यों न हो, हमें चावल ही चाहिये।

"'जिसे चावल पसन्द है, वह अगर चावल खाता है और जिसे गेहूंकी आदत है, वह अगर गेहूंकी ही रोटी खाता है, तो मैं अुस आदमीकी कोअी शिकायत नहीं करता। लेकिन सवाल कुछ प्रगट कठिनाअियोंका मुकाबला करनेके लिअे अपनी रहन-सहनमें थोड़ा फर्क स्वीकार करनेका है। युरोपमें, अेशियाके भी कअी देशोंमें, जहां पिछले युद्धका व्यापक असर हुआ, लोगोंने परिस्थितिकी लाचारी समझी और खान-पानकी अपनी सारी आदतें बदल डालीं।'

"श्री नेहरूने शक्करका अुदाहरण दिया और बताया कि अिंग्लैंडमें लोगोंको युद्धके दिनोंमें अेक-अेक और दो-दो चम्मच शक्कर प्रति सप्ताह मिलती थी, और कभी-कभी तो वह भी नहीं मिलती थी। लेकिन लोग शान्त रहे। भारतमें लोग अितने 'शक्कर-लाल हैं कि शक्कर कम दी जाय तो हल्ला करते हैं और अितनी मुश्किल कर देते हैं कि अन्न-मंत्रियोंको शक्करका आयात करना पड़ता है।' अगर लोग कठिनाअियोंके कालमें अपनी आदतें थोड़ी-बहुत बदलनेके लिअे तैयार नहीं होते, तो देश आगे नहीं बढ़ सकेगा।"*

मध्यमवर्गके लोगोंके विषयमें यह आरोप अंशतः सही हो सकता है। लेकिन मजदूर-वर्गके लोगों पर यह दोष नहीं लगाया जा सकता। बेशक, वे भी जिस धान्य, दाल या तेलका अुन्हें अभ्यास है अुसीको पसन्द करते हैं, लेकिन अगर ये सुलभ न हों, तो अुनकी जगह दूसरी चीजोंको न सिर्फ स्वीकार कर लेते हैं, बल्कि खुद अुनकी खोज भी करते हैं। अैसी हालतमें घास और जंगली कन्दमूल तकसे पेट भरनेमें अुन्हें हिचक नहीं होती। परेशानी तो अुन्हें तब होती है, जब वे देखते हैं कि अुनके अिस आपत्कालकी खुराकको भी व्यापार और मुनाफेके लिअे हथिया लिया गया है। अिसके सिवा, यदि कोअी व्यक्ति किसी अमुक धान्य, दाल या तेलकी ही अिच्छा करता है, तो अुसका कारण मन या स्वभावकी कोअी विचित्रता नहीं है। अनुभवकी बात है कि जिस शरीरको बचपनसे ही किसी खास धान्य, दाल या तेलकी आदत हो गअी है, अुसकी जगह वह कोअी दूसरी चीज ले, तो अुससे पूरा पोषण पानेमें असमर्थ रहता है, और कभी-कभी तो अस्वस्थ भी हो जाता है। आहारके विशेषज्ञोंको अपने रासायनिक विश्लेषण और चूहों पर किये गये प्रयोगोंके नतीजोंका पक्का विश्वास होता है। अुन्हें जुआर-बाजरा, गेहूं-चावल आदि अनाजोंमें; मूंग, तुअर, चना आदि दालोंमें; और तिल, सरसों तथा मूंगफलीके तेलमें कोअी खास फर्क नजर नहीं आता। लेकिन मनुष्यका पचन-यंत्र अुसमें फर्क महसूस करता है। दूसरी चीजोंको पर्याप्त मात्रामें लिया जाय तब भी शरीर दुबला रहता है, और अगर वह कमजोर हो तो किसी रोगका शिकार भी हो जाता है।

फिर, शासनका दायित्व जिन पर है, अुनका अपना व्यवहार भी लोगोंकी नाराजी और असन्तोष बढ़ानेका काम करता है। वे देखते हैं कि ठीक अुनकी आंखोंके सामने बड़े-बड़े सरकारी भोज हो रहे हैं, अुनमें अन्नकी और पैसेकी बरबादी हो रही है, और जिस खाद्यान्न और शक्कर आदिसे अुन्हें महरूम रखा जा रहा है, अुनका अिन भोजोंमें छूटसे अुपयोग हो रहा है। वे लोग यह भी देखते या सुनते हैं कि सरकारी कर्मचारी और मंत्री भी अिन आयोजनोंमें भाग लेते हैं; और वे पढ़ते हैं कि जब धारासभामें अुनसे सवाल किया जाता है तो वे टालमटोल करते हैं। लोग अिस बातसे भी बेखबर नहीं हैं कि कितनी ही बार मिलावट किया हुआ या खराब या सड़ा-भुसा यहां तक कि अखाद्य अन्न भी सरकारी दुकानोंने बांटा है। वे देखते हैं कि धनिकोंको या प्रभाव-शाली लोगोंको शासनकी सक्रिय मदद अिस श्रेणीके नियम तोड़नेमें मिलती है, और वे अुन्हें तोड़ते हैं। वे पढ़ते हैं कि अिस सिलसिलेमें जो लोग पकड़े जाते हैं, अुन्हें यदि पहली अदालतमें सजा हो भी जाय तब भी वे अपीलमें छूट जाते हैं — अिसलिअे नहीं कि मुकदमा झूठा था, बल्कि अिसलिअे कि कोअी चतुर वकील कानूनमें या कार्रवाअीमें कोअी दोष ढूंढ़ निकालता है। साथ ही वे यह भी देख रहे हैं कि ये अनुचित घटनायें साल-दरसाल बढ़ती ही जा रही हैं। तो अैसी स्थितिमें लोगोंको यह विश्वास कैसे हो कि देशमें सब जगह और सबके लिअे चीजोंकी सचमुच कमी है और अुन्हें अिस सम्बन्धमें सरकार जो भी कर रही है, अुसके साथ सहानु-भूतिपूर्वक सहयोग करना है?

कालाबाजार

"लेकिन अेक चीज जरूर अैसी है, जिसकी चिन्ता अुन्हें (नेहरूजी) और अुनके साथियोंको है। वह है, जिसे आम तौर पर लोग 'कालाबाजारका पैसा' कहते हैं। अिस पर सरकारका कोअी नियंत्रण नहीं है और योजनाकी किसी भी तसवीरमें अुसका लेखा नहीं हो पाता। कालाबाजारके खिलाफ काफी असन्तोष है, और वे सब अुसके बहुत खिलाफ हैं और अुसे कुचल देना चाहते हैं।

"लेकिन यह 'योजनाकी और शुद्ध सामाजिक व्यवहारकी दृष्टिसे भी अेक गम्भीर सवाल है।' कअी राज्य सरकारोंने अिस बुराअीको दूर करनेकी चेष्टा की है, और कभी-कभी अेक सीमा तक अुन्हें अिसमें सफलता भी हासिल हुअी है। कुछ लोगोंको अिसमें सजायें भी हुअी हैं। अगरचे यह ठीक है कि 'ये लोग जिन्हें मामूली आदमी कहा जाता है, अुस श्रेणीके थे; बड़े लोग नहीं पकड़े गये।' मामूली आदमी

* सब अुद्धरण १७ अक्तूबर, '५१ के 'हिन्दुस्तान टाअिम्स' में प्रकाशित श्री नेहरूके संसदमें दिये गये भाषणकी रिपोर्टसे लिये गये हैं।

www.vinoba.in

कालाबाजार करता है तब वह खराब तो है, लेकिन फिर भी वह अेक वैयक्तिक अपराध ही होता है। लेकिन जब अुसे पैसेवाले, बड़े-बड़े व्यापारी करने लगते हैं, तो वह बुराअी अेक सामाजिक सवाल बन जाती है। * * *

"योजनामें अिसका अुल्लेख नहीं हुआ है, तब भी योजना-समितिने अिस सवालको महत्त्व दिया है और वह अुसके तात्कालिक हलका अुपाय सोच रही है। आजकी हालतमें अुससे निपटना कठिन मालूम होता है, क्योंकि अुसका प्रचलित कानूनी तरीका कठिन है और धीमा है। जो लोग अुसकी लपेटमें आते हैं, वे काफी बड़े-बड़े होते हैं, अुनमें बहुत-सी बड़ी-बड़ी रकमोंका सवाल होता है, और सरकारी कर्मचारियोंको मोटे अिनामोंका प्रलोभन दिया जाता है। कानून तो साधारण मामलोंकी कल्पना पर बनाया जाता है। तो अैसी हालतमें वही होता है जो अनिवार्य है। मुकदमें जहां दायर किये जाते हैं, वहां भी वे दो-दो और तीन-तीन साल तक घिसटते रहते हैं और कामयाब नहीं होते। श्री नेहरूने कहा कि 'सरकारके पास नये और अतिरिक्त अधिकार होने चाहियें। मुझे विश्वास है कि यह संसद अिसमें कोअी आनाकानी नहीं करेगी और देश भी सरकारके अिस कदमका समर्थन ही करेगा, बशर्ते कि अिस बड़ी सामाजिक बुराअीको मिटानेकी मांकूल कोशिश हो।'"

अिस प्रसंगमें मैं नम्रतापूर्वक कहना चाहता हूं कि सरकार अिस विषयमें दण्ड और नियंत्रणके कानूनोंकी सख्ती पर सारा जोर न डाले। जिस बातकी आवश्यकता है, वह यह नहीं कि अेक-दो व्यक्तियोंको डटकर कड़ी सजा दी जाय, ताकि फिर कोअी वैसा गुनाह करनेकी हिम्मत न करे, परन्तु अिस बातकी है कि पक्षपात और भय दोनों छोड़कर सबका सावधानीके साथ नियमन किया जाय। चोरोंके पांव तोड़कर अुन्हें लंगड़ा कर डालने, डाकुओंको फांसी पर लटकाने, और बेअीमानी करनेवालोंको कोड़े मारनेकी सजायें देनेके प्रयोग कअी राज्योंने पहले भी किये हैं। पर अुससे गुनाह कम नहीं हुअे। क्योंकि सजा जितनी बड़ी होती है, अुसी मात्रामें वह कानून तोड़नेवालों, क़ानूनगाओं (वकीलों) और भ्रष्ट सरकारी कर्मचारियोंकी चतुराअी और पुरस्कार भी बढ़ाती है। दण्डका कानून तो रखना होगा। लेकिन जीवन-शुद्धिमें अुसका अुपयोग बहुत कम है। राजा या मंत्रीके लिअे कुछ अंग-रक्षकोंकी जरूरत हो सकती है। लेकिन अगर सरकारका गृहमंत्री यह सोचे कि अिस व्यवस्थासे अब अुनकी हत्याका कोअी खतरा नहीं रहा, तो वह भूल करेगा। गुनाहके नाशके लिअे बनाये गये दण्ड-कानूनोंकी भी यही बात है।

सामाजिक बुराअीका अुच्छेद तो जनताकी नैतिक तालीम और अुसके नेताओंके आदर्श व्यवहारके बल पर ही हो सकता है। और अिस विषयमें हमारे बहुतेरे मंत्रियों, धारासभाके सदस्यों और श्रीमन्त तथा सम्पन्न व्यक्तियों पर अुड़ाअुपनका और अपने ही कानूनोंके अक्षरार्थमें शायद नहीं तो भी नैतिक-भंगका दोष लगाया जा सकता है। हमें बताया गया है कि युरोपीय देशोंमें जनताका अनुशासन बहुत अूंचा है। मेरा विश्वास है कि अिंग्लैंडके विषयमें यह बात सही है। लेकिन मेरा खयाल है—और अुसके लिअे आधार है—कि युरोप और अमेरिका खंडके देशोंमें, अफ्रीका और आस्ट्रेलिया तथा अेशियाके अधिकांश देशोंमें यह नैतिक बुराअी और कानूनका अैसा अुल्लंघन जोर-शोरसे चल रहा है। जहां तक अपने देशका सवाल है, मेरी धारणा है कि अगर चोटीके लोग देशप्रेमकी प्रेरणा पर अीमानदारीके साथ सादगी और संयमकी दिशामें अेक कदम भी आगे बढ़ें, तो जनता पांच कदम बढ़ेगी। परम्पराकी शिक्षा और हमारा स्वभाव ही अैसा है कि हमारी जनता नम्र है, कानूनको मानकर चलनेवाली है, और कष्ट तथा अभावोंको जीवनके अनिवार्य अंगकी तरह स्वीकार करनेकी हमेशा मानसिक तैयारी रखती है। अुस पर सदियों तक अत्याचार हुअे हैं, लेकिन अुसने शायद ही कभी खीझकर मर्यादा लांघी है। सब मिलाकर हमारी साधारण जनताका मन शान्त और स्वस्थ है। बुराअी बाहरी तल पर है; वह कीचड़के अुन छींटोंकी तरह है, जो धनी आदमीकी मोटरगाड़ी बरसातके दिनोंमें पैदल राहीकी पोशाक पर अुड़ा जाती है। शुद्ध व्यवहार-मण्डलको जो सहयोग मिल रहा है, अुसे देखकर हर्ष भी होता है और खेद भी। अुत्साह अिसलिअे होता है कि मध्यम-वर्गके कितने ही व्यापारियों और ग्राहकोंने अीमानदारीसे रहनेकी अिच्छा जाहिर की है। वे चाहते हैं कि अनैतिक अुपायोंका आश्रय न लें। लेकिन वे अपनी समस्यायें सामने रखते हैं और अपने मार्गकी व्यावहारिक कठिनाअियोंके हलके लिअे सलाह मांगते हैं। ये कठिनाअियां ज्यादातर नियंत्रण-कानूनों, कानूनके शासक कर्मचारियों और मक्कार व्यापारियों तथा अुद्योगपतियोंकी पैदा की हुअी हैं। खेद यह देखकर होता है कि शुद्ध व्यवहार आन्दोलनके संचालक सविनय-कानूनभंगको छोड़कर अिन बुराअियोंसे बाहर निकलनेका कोअी दूसरा रास्ता नहीं सुझा पाते। अभी तक कोअी अेक भी अैसा बड़ा व्यापारी या अुद्योगपति सामने नहीं आया, जिसने यह सोचा हो कि शुद्ध व्यवहार पर चलना शक्य और व्यवहार्य है।

विद्यार्थी और मजदूरी

"पुरानी राष्ट्रीय योजना कमेटीकी सिफारिश थी कि प्रत्येक युवक विद्यार्थीको अेक-दो वर्ष खेती या अुद्योगालयोंमें शरीरश्रम करनेके लिअे बाध्य करना चाहिये। अुसके बाद ही अुन्हें अपनी शिक्षाकी समाप्तिका प्रमाण-पत्र मिलना चाहिये। अिस अुपायसे देशको भी लाभ होगा और युवकोंको भी योग्य शारीरिक और मानसिक तालीम मिलेगी। प्रादेशिक सरकारोंने अिस सूचना पर अमल भी किया, लेकिन अुन्हें अिसमें बहुत ही कठिनाअियां महसूस हुअीं। अिस दिशामें छोटा-मोटा आरंभ अभी भी होना चाहिये, बादमें अगला कदम अुठाया जाय और २० तथा २२ वर्षके बीचकी अुम्रके हरअेक युवकके लिअे किसी न किसी प्रकारका शारीरिक काम अनिवार्य कर दिया जाय।"

विद्यार्थियोंकी संस्थाओंके कामके अहवाल मुझे अकसर मिलते रहते हैं। अुनसे तथा रचनात्मक कार्यकर्ताओं द्वारा आयोजित शिक्षण-शिविरोंके अनुभवसे अिस प्रयत्नकी सफलताकी आशा बंधती है। विद्यार्थियोंको जैसी निकम्मी तालीम आज मिलती है, अुसे देखते हुअे वे आशासे कहीं अधिक अच्छा काम कर रहे हैं। किसी बालक या बालिकाको तीन सालसे बीस सालकी अवस्था तक स्वच्छ और सुन्दर वेशभूषावाले भद्रपुरुष या महिलाके कृत्रिम जीवनकी तालीम दी जाय और बाअीस वर्षकी अवस्थामें वह अुसी जीवनमें फिरसे रमनेवाला हो, तो सिर्फ अिक्कीसवें वर्षमें अेक साल तक वह खेती या अुद्योगके क्षेत्रमें सुयोग्य मजदूरकी तरह काम करेगा, यह आशा अुससे नहीं की जा सकती। हमारे सभ्यता-कामी मां-बाप अपने तदनुरूप होनेवाले बच्चेको बचपनमें ही यह बता देते हैं कि हाथ-पांवमें धूल लगना गंदगीका चिन्ह है, कपड़े गीले हो जायं या अुन पर कीचड़का दाग पड़ जाय, तो यह असभ्यताकी निशानी है। बच्चा अगर अखबारमें से अेक-आध शब्द पहिचान लेता है या तीन सालकी अुमरमें बीस तक गिनती कह लेता है,

www.vinoba.in

तो वे अुसे शाबाशी देते हैं। अच्छे लड़के या लड़कीसे अुम्मीद की जाती है कि वह ज्यादा खेलेगा नहीं। और यदि वह खेले तो खेल सभ्य और आधुनिक किस्मका होना चाहिये; जैसे, क्रिकेट, फुटबॉल या टेनिस। वह कुदाली लेकर काम कर सके या लगातार धूपमें या वर्षामें कुछ घंटे रह सके — अिस प्रकार न तो अुसके शरीरको कोअी तालीम दी जाती है और न अुसे अैसी कोअी आदत ही डाली जाती है। जिनके पिता खुद किसान, कारीगर या मजदूर हैं, अैसे विद्यार्थी भी आधुनिक शिक्षा तथा शहर और शहरके छात्रालयोंमें अपने आठ-दस साल बितानेके बाद मेहनत-मजदूरीका अपना परम्परागत बल और कौशल खो देते हैं। तो अैसे विद्यार्थीसे हम अेकाअेक अिक्कीस सालका होने पर यह कहें कि तुम किसी गांव या कारखानेमें अेक साल तक मजदूरी करो और फिर वह अुसमें असफल और अयोग्य सिद्ध हो, तो हम अुसे ज्यादा दोष नहीं दे सकते। अुसे खेतीमें अटपटा लगता है। काम तो वह कुछ नहीं कर पाता, गांवका जीवन जरूर दूषित कर सकता है। कारण, वह गांवमें केमरा, फाअुन्टेनपेन आदिसे सजधजकर कोडक, पार्कर, अेवुरेडी, बाटा, नीलगिरि और वर्जीनिया, लिपस्टिक आदिके स्वयं-नियुक्त अेजेंटकी तरह जायगा; कोट और शेरवानी, साड़ी और ब्लाअुजकी नअी से नअी फेशनोंका प्रदर्शन करेगा; और गांवके भोले लड़कोंमें ये शौक फैलायेगा और अुन लड़कोंके मां-बापोंमें अेक नअी चिन्ता निर्माण कर देगा।

अगर हम लड़कोंको योग्य किसान या मजदूर भी बनाना चाहते हैं, तो विद्यालयोंकी पुस्तकीय शिक्षाके साथ-साथ अिस चीजकी तालीम भी अुन्हें आरंभसे ही मिलनी चाहिये।

पाठकोंको गलतफहमी न हो। ये टिप्पणियां श्री नेहरूके वक्तव्यके खिलाफ या अुसके खण्डनमें नहीं हैं। नेहरूजीने जो कहा है, वह बहुत अुचित है और मैं अुसकी ताअीद करता हूं। लोगोंको यह नहीं सोचना चाहिये कि परिस्थिति बिगड़ रही है, तो अिसमें सारा दोष सरकारका ही है; लोग तो बहुत भले हैं और शासनमें सुधार हो जाय तो और भी भले हो जायंगे।

लोगोंको समझ लेना चाहिये कि शासन भी तब तक नहीं सुधर सकता, जब तक कि वे खुद अपने विचारोंमें और आचरणमें प्रगति और अीमानदारीका परिचय नहीं देते। साथ ही, शासनको भी अिस सवाल पर गहराअीसे गौर करना चाहिये और महसूस करना चाहिये कि जनता भी, अपनी सारी सद्भावनाके बावजूद, तब तक नहीं सुधर सकती, जब तक शासनमें अुच्च आचार-विचारका आदर्श रखनेवाले व्यक्ति काफी संख्यामें न हों, और जब तक शासनकी प्रणालीमें बुनियादी तबदीली करके अुसे सरल और सत्वर नहीं बना दिया जाता।

वर्धा, २०-१०-'५१ **कि० घ० मशरूवाला**

(अंग्रेजीसे)

गांधी और साम्यवाद

[श्री विनोबाकी भूमिका सहित]

लेखक: **किशोरलाल मशरूवाला**

कीमत १-४-० डाकखर्च ०-४-०

एक धर्मयुद्ध

लेखक: **महादेव देसाअी**

अनु० **काशिनाथ त्रिवेदी**

कीमत ०-१२-० डाकखर्च ०-३-०

नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद-९

विनोबाकी तेलंगाना-यात्रा

६

चौथा मुकाम

[ता० १८-४-'५१ : पोचमपल्ली : १२ मील]

तेलंगानाके मांगल्यकी अनुभूति

कम्युनिस्ट-कारनामोंके लिअे हैदराबाद राज्यके दो जिले प्रसिद्ध हैं, नलगुंडा और वारंगल। अुनमें से नलगुंडा जिलेमें आज विनोबा प्रवेश कर रहे थे। पिछले दोनों मुकाम यद्यपि तेलंगानाके ही हैं और वहां भी कम्युनिस्ट कार्रवाअियोंका कुछ दर्शन हुआ है, फिर भी वे कम्युनिस्ट कथाओंकी प्रस्तावना भर हैं। पुस्तकका प्रारंभ तो अब होगा। सच्चा दंडकारण्य भी यहींसे शुरू होता है। हयातनगर और बाटासिंगारम्, ये दोनों अुसके द्वार समझिये। सारा रास्ता दुतर्फा पहाड़ीसे होकर गुजरता है। पहाड़ियां जो पहले घने दरख्तोंसे लदी हुअी थीं, अब अुनसे मुक्त हैं, क्योंकि अुनकी आड़में कम्युनिस्ट छिप जाया करते थे, ताकि राहगीरों पर ठीक दाव साध सकें। अिसलिअे सारा जंगल अब छंट गया है। फिर भी रास्तेके दोनों तरफ दिखाअी देनेवाले ये पर्वतमंडल, वात्सल्यमयी भरणी-धरणीके साक्षी ही हैं और अेकके बाद दूसरी पर्वत-पंक्तियां अैसी प्रकट होती जाती हैं, मानो कमल-दलकी अेक-अेक पंखुड़ी धीरे-धीरे खिल रही हो। सवेरेकी शेष चांदनीमें दस मीलका रास्ता सहज ही तय हुआ। रास्तेमें स्थान-स्थान पर स्वागत-समारोहोंका स्वीकार करते हुअे हम पोचमपल्ली ७ या ७-३० बजेके करीब पहुंचे। लोग दो कतारोंमें अनुशासनके साथ नाम-धुन गाते खड़े थे। शिवरामपल्लीकी यात्रामें जगह-जगह अैसी भीड़ लगती थी कि स्त्रियां-बच्चे तो कअी बार दब जाते थे। अैसी भीड़ न लगने पावे, अिसलिअे अिस तरह शांतिके साथ दो कतारोंमें खड़े रहनेकी सूचना ही सब तरफ भेजी गअी थी। अुस पर अमल होता दिखाअी दे रहा था।

अब तेलंगानाकी विशेषताका दर्शन होने लगा। पूरा गांव साफ-सुथरा, कहीं पानीका छिड़काव, कहीं गोबरसे लिपा-पुता। जगह-जगह अल्पनाअें। निवास पर पहुंचते ही दो पंडितोंने श्रीफल भेंट किया और पुरुष-सूक्त सुनाया, जिसमें विनोबाजी सहज ही तन्मय हो गये।

गांवकी हालत

पोचमपल्ली सात सौ घरोंका अेक छोटासा गांव है। तीन हजार जनसंख्या है, जो पवनारकी याद दिलाती है। निवासके सामने ही पवनारवाली धाम नदीकी तरह अेक बड़ा तालाब भी है। वर्धा-नागपुरके रास्तेकी तरह सामनेसे अेक रास्ता भी गुजर रहा है।

अिस छोटे-से गांवमें बुनकरोंकी संख्या ६४३ है, हरिजन २१९। तीन हजार लोगोंमें से दो हजारके पास जमीन बिलकुल नहीं है। सेंदी पीनेवालोंकी संख्या भी दो हजार है। रोज डेढ़ सौ रुपयोंकी सेंदी बिकती है। शिक्षक गायब है, अिसलिअे अेक हरिजन-प्रेमी भाअीने हरिजन बच्चोंका मदरसा अलग चला रखा है।

कम्युनिस्टोंके कामोंका परिचय भी मिला। यह गांव अुनका केंद्र माना जाता है। पिछले गांवोंमें जो कुछ देखा-सुना, अुससे यहां अधिक ही देखने-सुननेको मिला। यहां चार हत्यायें हुअीं, यहांसे नजदीक येरूरी गांवमें तीन; अिर्द-गिर्दकी मिलाकर दो बरसमें कुल बीस। जो कोअी अुनके बारेमें जरा-सी भी जानकारी किसीको, यानी पुलिस या कांग्रेसवालोंको देगा अुसको गोलीका शिकार होना पड़ेगा। और अिस केंद्रमें कुल कम्युनिस्ट दस या बारह हैं। अुनकी खोजके लिअे हथियारबन्द पुलिसका डेरा यहां पड़ा है।

www.vinoba.in

"हम कहां ठहरे हैं?" विनोबाने गांववालोंसे पूछा।

"मदरसेकी अिमारतमें।"

"कितने बच्चे पढ़ते हैं?"

"सात।"

"मास्टर?"

"अेक।"

तीन हजारकी बस्तीके भावी नागरिकोंकी शिक्षाका यह हाल। मास्टर भी रोज हाजिर नहीं रहते। कभी-कभी अपनी सुविधासे आकर पढ़ा जाते हैं।

बालक भागवान है

सवा नौ बजे होंगे। ग्राम-प्रदक्षिणाके लिअे विनोबाजी निकले। पहले हरिजन बस्तीमें ही गये। कभी मकानोंके भीतर जा-जाकर देखा। अंदर-बाहर समान स्वच्छता। हरिके जन अंदर अेक बाहर दूसरे हो भी कैसे सकते थे? अेक घरके भीतर देखा कि चार दिनकी नव प्रसूता जमीन पर बैठी है। बालक चटाओी पर ही लिटाया गया है। बच्चेको विनोबाने गोदमें अुठा लिया और अुसकी मांके पास बैठ गये। अुस बालककी आंखोंमें अुनकी आंखें मानो गड़ गओीं। 'बालक भागवान है,' मांके मुंहसे सहसा शब्द निकल पड़े। अिस बीच अुसके हाथ विनोबाके चरण छू चुके थे — जिसका शायद न हाथोंको पता था, न अुसको, न विनोबाको। बाहर आये तो देखा कि पूरी हरिजन बस्तीके लोग अिकट्ठा हो चुके थे।

अुन्हें अपने बच्चोंके लिअे अलग मदरसा चाहिये था। तय हुआ कि बच्चे अलग मदरसेमें नहीं पढ़ेंगे, सबके साथ अुसी सरकारी मदरसेमें पढ़ेंगे। कोशिश की जायगी कि पढ़ाओीका अच्छा प्रबंध हो। मकानोंके लिअे जगह चाहिये थी। अिसमें कानून भी हरिजनोंकी सहायता करता है। तय हुआ कि अुन्हें जगह दिलवानेके लिअे तहसीलदारसे कहा जाय। लेकिन ये सब सवाल तो गौण थे। मुख्य सवाल था जमीनका। 'हम लोगोंको खेतीके लिअे जमीन चाहिये,' यह अुनकी जरूरत थी।

भूमिहीनोंकी मांग

गांवमें कुल २५०० अेकड़ जमीन है। तीन हजारकी बस्ती, यानी फी आदमी ⅚ अेकड़से कुछ अधिक। आज ये सारे हरिजन जमीनवालोंके यहां मजदूरीसे काश्त करते हैं। सालभरमें अुपजका २०वां हिस्सा पाते हैं, अेक कम्बल और अेक जोड़ी जूता। बस।

"जमीन कितनी चाहिये?" विनोबाने पूछा। थोड़ी देर आपसमें विचार करने पर मुखियाने खड़े होकर जवाब दिया — "८० अेकड़ बस होगी, खुश्की ४०, तरी ४०।"

"अितनीसे काम चल जायगा?"

"जी, हम लोग और भी कुछ काम कर लेते हैं।"

"यदि हम आप लोगोंको जमीन दिलवा दें, तो आप सब मिलकर सामुदायिक काश्त कीजियेगा या जुदा-जुदा?"

"सब मिलकर।", थोड़ी देर विचार करके मुखियाने जवाब दिया।

"तो हमें अेक अर्जी लिख दो, हम आपके लिअे कोशिश करेंगे।"

दानकी गंगोत्री

गांववाले भी वहां बैठे थे। विनोबाने सोचा, अिनसे भी पूछना चाहिये। "यदि सरकारकी ओरसे जमीन न मिल सके या देरी लगे, तो अुस हालतमें गांववालोंकी ओरसे कुछ किया जा सकता है?"

अेक भाओी, श्री रामचन्द्र रेड्डीने खड़े होकर नम्र भावसे कहा: "मेरे स्वर्गीय पिताजीकी अिच्छा थी कि कुछ जमीन अिन भाअियोंको दी जाय। लिहाजा, मैं अपनी ओरसे और अपने पांच भाअियोंकी ओरसे सौ अेकड़ — जिसमें पचास खुश्की और पचास तरी है — आपके द्वारा अिन लोगोंको भेंट करता हूं।"

शामकी सभामें विनोबाने अिसकी घोषणा करते हुअे दाताको खड़े होनेके लिअे कहकर अुनकी तरफ अिशारा करके कहा: "अगर यह भाओी वचनपालन नहीं करेंगे, तो भगवान्के गुनहगार होंगे। पर अगर वह जमीन देते हैं, तो आप सब पर यह जिम्मेदारी है कि सारेके सारे प्रेमभावसे रहें और जमीनकी सामुदायिक व अच्छी काश्त करें। अगर सब गांवोंमें अैसे सज्जन मिलते हैं, तो यह कम्युनिस्टोंका मसला ही हल हो जाता है।"

तेलंगानाकी सफल यात्राका यह अेक महान् शुभ संकेत था। छोटा ही क्यों न हो, परन्तु दान-गंगाका अुगम था। अपहरणके दावानलको अपरिग्रहके अस्त्र द्वारा शांत करनेका संकल्प था। कौन जानता था कि यह छोटी-सी घटना अेक महान् अहिंसक क्रांतिकी अग्रदूत साबित होगी! विनोबाके वे शब्द "अगर सब गांवोंमें अैसे सज्जन (दाता) मिलते हैं, तो यह कम्युनिस्टोंका मसला ही हल हो जाता है," आज भी वातावरणमें गूंज रहे हैं। वह वाणी 'भविष्य-वाणी' ही सिद्ध हुओी।

सेंदीके पाशसे मुक्तिका संकल्प

लेकिन आज और भी अेक अच्छे कामका श्रीगणेश होना था। यह समस्या पहलीसे भी कठिन थी। परन्तु भगवान्को, सूक्ष्म रूपसे ही क्यों न हो, तेलंगानाके मसलेको सुलझानेका समग्र-दर्शन पेश करना था।

"सेंदी कौन-कौन पीते हैं?" विनोबाने हरिजन भाअियोंसे पूछा।

"हम सब पीते हैं।"

"तुम लोगोंने सही-सही बता दिया यह अच्छा किया। पर अब यह बताओ कि सेंदी छोड़नेमें अरसा कितना लगेगा?"

मुखियाने अपने साथियोंसे बातचीत शुरू की। वातावरण अुत्सुकता और गंभीरताके भावोंसे भरा लगने लगा। दो मिनट भी नहीं बीते और मुखिया खड़ा हुआ। सारी आंखें अुसकी ओर मुड़ीं। अुसकी भारतीने कहा:

"महाराज, हम आजसे ही निश्चय करते हैं कि हम आअिन्दा सेंदी नहीं पीयेंगे।" किसीने सुझाया कि प्रतिज्ञा लिखा ली जाय। विनोबाने मना किया: "आज आप लोगोंके प्रति अिन भाअियोंके दिलोंमें अेहसानकी भावना है। अुसके दबावमें वे तो फौरन प्रतिज्ञा कर लेंगे, पर अैसा नहीं करना चाहिये। बरसोंकी आदत है, छूटते-छूटते छूटेगी। अगर वे अपने वचन पर कायम रहें तो काफी है।"

बिना हाथ-सूतके चारा नहीं

तीसरी समस्या पेश हुओी। बुनकर आये। "सूतका कोटा पर्याप्त नहीं मिलता। आधी पेटी ही मिलती है, जिससे अेक हफ्तेसे ज्यादा काम नहीं रहता। करीब तीन हफ्ते बेकार रहना पड़ता है। सूत दिलवाअिये।"

"सब जगह यही हाल है।" विनोबाने अुनके साथ पूरी सहानुभूति अनुभव करते हुअे कहा।

"फिर क्या किया जाय?" बुनकरोंने पूछा।

"आप लोग ही बताअिये" — विनोबाने अुन्हींसे सवाल किया और फिर सहसा अुनको समझाना शुरू किया:

"अरे भाओी, जब अपने देशमें पहले मिलें नहीं थीं, तब क्या बुनकर नहीं थे? या बेकार बैठे रहते थे? या लोग नंगे रहते थे? और तुम लोग खुद बुनते हो, फिर भी तुम्हारे बदन पर यह मिलका कपड़ा है! जब तक तुम अपना बनाया हुआ कपड़ा नहीं पहनोगे, मसला हल नहीं होगा। क्या किसान अनाज पैदा करके रोटी खरीदता है? तुम लोग खुद ही अपने कामको काटते हो! होना यह चाहिये कि हमें अपने लिअे सूंत कात लेना चाहिये।" अपनी धोती, दुप्पटे और बिस्तरेके कपड़े बताते हुअे कहा — "यह देखो, यह कपड़ा कितना अच्छा है? सब-का-सब हाथका है। कातनेका निश्चय करो तो जिंदा रह सकोगे।"

www.vinoba.in

बुनकरोंने फिर सवाल किया: "यहां कपास नहीं होती।"

"ठीक है, पर पहले भी कपास नहीं होती थी, अैसी बात तो नहीं है न? गांववालोंने अगर अब कपास बोना छोड़ दिया है, तो तुम्हें फिरसे वह शुरू करना चाहिये। यह केवल पोचमपल्लीका सवाल नहीं है, सभी गांवोंका सवाल है। और यहां तो मैंने सुना है कि कपास बोनेवालेको लगान भी माफ हो जाता है। जब तक कपास पैदा नहीं होती, तब तक वह खरीदी जा सकती है। कपड़ा खरीदनेसे बेहतर है कि कपास खरीदी जाय।"

जन-मानसकी अेकात्मकता जन-भाषासे ही

बुनकरोंके बाद धोबी भी अपनी बात सुनाने आये। अिस तरह अेक-अेकसे व्यक्तिगत और सामूहिक रूपसे पांच बजे तक बातें होती रहीं। लोगोंको लगता था कि हमारा कोअी सहारा ही आया है। अिधर भीतर मुलाकातें हो रही थीं, अुधर बाहर जनता खूब जमा हो गअी थी। हमारे निवासके सामने तालाबके किनारे नीमके बड़े-बड़े दरख्त थे। अुनकी छायामें करीब पांच हजार स्त्री-पुरुष जमा होकर विनोबाका अिंतजार कर रहे थे। अिर्द-गिर्दके गांवोंसे भी लोग आये थे। गांवोंमें रेवनपल्ली, भीवनपल्ली, गोसकोंडा, कनमुकला, राअुलपल्ली, कपरासपल्ली आदि सभी गांवके लोग थे। ये गांव कम्युनिस्ट भाअियोंके कार्य-क्षेत्र माने जाते हैं। विनोबाके सभामें आते ही लोगोंने महात्मा गांधीकी जयका अुत्साहभरा नारा लगाया। विनोबा मंच पर बैठे, तो अूपर कोयलने भी मधुर कंठसे अुनका अभिवादन किया। सबको सुनाअी दे अिस खयालसे जनताके बीचोंबीच खड़े होकर विनोबाने तेलगू गीतासे स्थितप्रज्ञके श्लोक पढ़े। अुनके मुखसे तेलगू सुनते ही शांत जनसमुदाय मुग्ध होकर चित्रवत् श्रवण-भक्तिमें रम गया-सा प्रतीत हुआ। अुन्हें मानो यकीन हो गया कि यह फकीर अुन्हींका आदमी है।

अपने प्रवचनमें विनोबाने साफ शब्दोंमें समझाया कि "हिन्दुस्तानमें अब यह संभव नहीं कि श्रीमान् लोग ज्यादा जमीन अपने हाथमें रख सकें।" लेकिन जहां अुन्होंने बंटवारे पर जोर दिया, वहां साथ ही अुन्होंने ग्रामोद्योगोंका भी महत्त्व समझाया और सेंदी-शराबसे मुक्त होनेके लिअे कहा।

जमीनका ट्रस्ट

जो सौ अेकड़ भूमि दानमें मिली, अुसकी योग्य व्यवस्था व आवश्यक कानूनी कार्रवाअीके लिअे पांच लोगोंकी अेक ट्रस्ट-कमेटी मुकर्रर हुअी, जिसमें हरिजनोंके दो नुमाअिन्दे रखे गये, अेक गांवका पटेल, अेक आंध्र प्रदेश कांग्रेस कमेटीके अध्यक्ष श्री वेंकट रंगा रेड्डी और अेक दाता खुद। ये दाता कौन हैं, यह बतलाये बिना यह विवरण अधूरा रहेगा। अिस सौ अेकड़ जमीनके दाता श्री रामचन्द्र रेड्डीने अपनी बहन ही कम्युनिस्ट-आन्दोलनके नेता श्री नारायण रेड्डीको ब्याही है और वे दोनों पति-पत्नी कट्टर कम्युनिस्ट हैं। मानो अपनी बहन और अुसके पतिकी कार्रवाअियोंका यह प्रतीक रूपसे प्रायश्चित्त ही था। अिस दृष्टिसे रामचन्द्र रेड्डीका यह दान और भी महत्त्वपूर्ण हो जाता है।

आज भी 'वर्ण' और 'आश्रम' चाहिये

कम्युनिस्टोंके अिस केंद्रमें भी, जहां शांतिमय जीवनकी कुछ कम अपेक्षा की जा सकती थी, थोड़ी सामाजिक तथा आध्यात्मिक विषयोंकी चर्चा करनेके लिअे भी कुछ चिंतनशील लोगोंने समय मांगा और विनोबाने वह देना मंजूर किया। वर्णाश्रम-संबंधी पूछे गये अेक प्रश्नका जवाब देते हुअे विनोबाने समझाया: "वर्णाश्रम सबके लिअे, सब कालमें रक्षणीय और पालनीय है। हमारे गांवके बुनकरसे ही हमें कपड़ा लेना चाहिये, और हमारे गांवके तेलीसे ही तेल खरीदना चाहिये। गांवके चमारसे ही जूते बनवाने चाहियें। अिस तरह स्वदेशीका खयाल रखनेसे वर्ण-धर्म टिक सकेगा। यही बात 'आश्रम' की है। आज-कल लोग अंत तक गृहस्थी बने रहते हैं। यह वांछनीय नहीं है। वानप्रस्थ होना ही चाहिये।"

जहां भोजनकी अेक ही पंक्तिमें मांसाहार या शराब-ताड़ी चलती हो, वहां भोजन करने-न-करनेके औचित्यके बारेमें पूछे गये प्रश्नका जवाब देते हुअे विनोबाने कहा: "यदि पंक्तिमें ही मांसाहार या शराब-ताड़ी चल रही हो, तो अुनके साथ अुस पंक्तिमें बैठकर भोजन नहीं करना चाहिये। लेकिन आहार-साम्य हो, तो सब मिलकर अेक साथ खाना खायें यह अच्छा है। घरोंमें मांसाहार करनेवालोंके साथ भी पंक्तिमें निरामिष भोजन अेक साथ करनेमें कोअी हर्ज नहीं। हमें भोजनमें शबरी और रामका अुदाहरण अपने सामने रखना चाहिये। बिल्ली चूहेका आहार करती है, फिर भी हम अुसे हमारे पास बिठाकर दही-भात खिलाते ही हैं न?"

मुक्ति किससे?

अंतमें अेक प्रश्न 'मुक्ति' के सम्बन्धमें पूछा तो विनोबाने कहा:

"आसक्ति, क्रोध, काम, मोह, अज्ञान आदि विकारोंसे मुक्ति पाना ही मोक्ष है। अगर विकार-क्षय हो जाता है तो मोक्ष मिल गया। परमेश्वरकी भी अुपासना करनी है तो किस लिअे? विकारोंसे मुक्ति पानेके लिअे ही।"

दा० मूं०

महादेवभाअीकी डायरी

[तीसरा भाग]

संपा० नरहरि परीख

अनु० रामनारायण चौधरी

कीमत ६–०–० डाकखर्च १–१–०

बापूके पत्र मीराके नाम

अनु० रामनारायण चौधरी

कीमत ४–०–० डाकखर्च ०–१३–०

स्त्री-पुरुष-मर्यादा

लेखक : किशोरलाल मशरूवाला

अनु० सोमेश्वर पुरोहित

कीमत १–१२–० डाकखर्च ०–४–०

सरदार वल्लभभाअी

[पहला भाग]

लेखक : नरहरि परीख

अनु० रामनारायण चौधरी

कीमत ६–०–० डाकखर्च १–३–०

रचनात्मक कार्यक्रम

[दूसरा संस्करण]

लेखक : गांधीजी

अनु० काशिनाथ त्रिवेदी

कीमत ०–६–० डाकखर्च ०–२–०

नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद–९

विषय–सूची

विषय	लेखक	पृष्ठ
विनोबाकी अुत्तर भारतकी यात्रा – ४	दा० मूं०	३२१
गरीब अुम्मीदवार	कि० घ० मशरूवाला	३२२
अेक अुपयोगी सुझाव		३२३
कुछ आक्षेप	कि० घ० मशरूवाला	३२४
विनोबाकी तेलंगाना – यात्रा : ६	दा० मूं०	३२६

www.vinoba.in